प्रगति

श्रह्वखला 3 : अप्रैल – सितम्बर 2017

हिंदी

कक्षाVI

NOT FOR SALE

SPONSORED BY :

DELHI BUREAU OF TEXT BOOKS

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्

GNCT OF DELHI
शिक्षा निदेशालय
रा.रा.क्षे., दिल्ली सरकार

प्रगति

श्रृंखला 3 : अप्रैल - सितम्बर 2017

हिंदी

कक्षाVI

NOT FOR SALE

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

SPONSORED BY :

DELHI BUREAU OF TEXT BOOKS

GNCT OF DELHI

शिक्षा निदेशालय

रा.रा.क्षे., दिल्ली सरकार

पुनर्वीक्षण :

डॉ. शारदा कुमारी (वरिष्ठ प्रवक्ता)

सुश्री लक्ष्मी पाण्डेय (प्रवक्ता)

मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नई दिल्ली

परावर्द्धन एवं संपादन समूह :

- श्रीमती निशा जैन, मैंटर शिक्षक

  राजकीय बालिका उच्चतर माधयमिक विद्यालय, झिलमिल कॉलोनी,

दिल्ली - 110095

- श्रीमती आशा, मैंटर शिक्षक

  राजकीय कन्या वरिष्ठ माधयमिक विद्यालय, गोयला खुर्द, दिल्ली

- सुश्री राधाारानी भट्टाचार्य, मैंटर शिक्षक

  जी.जी.एस.एस., बुराड़ी, दिल्ली

- श्रीमती अंजूबाला रोहिल्ला, मैंटर शिक्षक

  राजकीय सहशिक्षा वरिष्ठ माधयमिक विद्यालय, पोसंगीपुर, बी-1, जनकपुरी,

  नई दिल्ली

- भूषण लाल दत्त, मैंटर शिक्षक, सर्वोदय बाल विद्यालय, रानी गार्डन, दिल्ली
- विपुल, मैंटर शिक्षक, जी.बी. एस.एस, बी सी-ब्लॉक, सुल्तानपुरी, नई दिल्ली

भूमिका

दिल्ली सरकार ने बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय लिया कि सभी अधयापक छोटे-छोटे समूहों में बैठकर छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षा के बच्चों की पुस्तकों का बारीकी से अवलोकन एवं अधययन करें और इन कक्षाओं के लिए निर्धाारित पाठ्यपुस्तकों में दी गई रचनाओं एवं विषयों को आधाार बनाकर सीखने-सिखाने के लिए पूरक सामग्री की रचना करें। इस समूचे अभ्यास का उद्देश्य यह था कि सभी अधयापकों को एक ऐसा साझा धारातल मिले जहाँ वे बच्चों के मौजूदा अधिागम स्तर की समझ के आधाार पर अपनी कक्षाओं के बच्चों के लिए अधययन अधयापन की सामग्री मिल-जुलकर तैयार कर सकें।

दूसरे शब्दों में, कह सकते हैं कि बच्चों के लिए सरल एवं संदर्भ युक्त पठन सामग्री तैयार करने का यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास था। इस महती उद्देश्य को पूरा करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधाान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा शिक्षा निदेशालय के हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक अधययन एवं विज्ञान के लगभग 20,000 अधयापकों के लिए मई एवं जून 2016 में कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं के सत्रें का संचालन सर्व शिक्षा अभियान के संवुळल संसाधान समन्वयकों के सहयोग से मैंटर शिक्षकों द्वारा किया गया।

इन कार्यशालाओं में अधयापकों ने विषयवस्तु के साथ-साथ कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त तौर-तरीकों पर भी खुलकर चर्चा की। इस प्रकार हिन्दी विषय का अधयापन कर रहे लगभग 4000 अधयापकों (टी.जी.टी हिन्दी) ने अपने विषय के लिए पूरक अधिागम सामग्री तैयार की। इसके बाद मैंटर शिक्षकों के एक समूह ने कार्यशालाओं में तैयार इस सामग्री का संपादन किया और मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा इस संपादित सामग्री का पुनर्वीक्षण किया गया। इस समूची प्रक्रिया में निर्धाारित पाठ्य पुस्तकों की विषय वस्तु को आधाार बनाते हुए पूरक अधिागम सामग्री तैयार की गई।

इस प्रक्रिया एवं सामग्री को 'कार्य में प्रगति' के रूप में देखा जाना चाहिए। यह सामग्री निर्धाारित पाठ्य पुस्तकों का विकल्प नहीं है, बल्कि यह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आधाार देने और उसका संवर्द्धन करने के लिए अतिरिक्त सामग्री है। हम अधयापकों एवं अधयापक शिक्षको से अपेक्षा करते है कि कि बच्चो के साथ इस सामग्री के निर्वाह एवं अंत: क्रिया से उपजे अनुभवों को हमारे साथ साझा करे , साथ ही इस प्रकार के प्रयासों में सुधार एवं संवर्द्धन के लिए अपने सुझाव भी दे द्य आप अपने सुझाव एवं फीडबैक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् , नई दिल्ली के होमपेज पर उपलबध फीडबैक प्रपत्र के जरिये ऑनलाइन भी भेज सकते है

संवाद........अपने अधयापक साथियों से

साथियों, आप सभी जानते हैं कि बच्चे औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से पहले ही भाषा की जटिलताओं और नियमों को आत्मसात् कर पूर्ण भाषिक क्षमता के साथ विद्यालय की देहरी के भीतर प्रवेश करते हैं। जो बच्चे बोल नहीं पाते वे भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए उतने ही जटिल वैकल्पिक संकेतों और प्रतीकों का विकास कर लेते हैं। आपने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों की इस सहजात भाषिक क्षमता का पूरा धयान रखते हुए और परिवार तथा आस-पास के लोगों के साथ अंत: क्रिया से उपजे अनुभवों का

समुचित उपयोग करते हुए उन्हें पढ़ने और लिखने की रोमांचक दुनिया में प्रवेश करवाया है। आप इस बात की भरपूर समझ रखते हैं कि आप के पास आने वाले बच्चे भिन्न-भिन्न सामाजिक-सांस्स्रतिक आर्थिक ढष्ठभूमि के हैं, उनके पास दुनिया को अपनी ही तरह से देखने के अपने तरीके हैं। वे बड़े सहज भाव से अपनी बात, अपने अनुभव, भावनाएँ, इच्छाएँ व्यक्त कर देते हैं।

आपने पढ़ना-लिखना सीखने के अवसर देते समय इस सहजता को धयान में रखा है। अब आपका समूचा धयान इस बात पर है कि आपके विद्यार्थी जिस सहजता के साथ पढ़ने लिखने की दुनिया में प्रवेश कर गए हैं, उसी सहजता के साथ वे इन भाषायी कौशलों में निपुणता भी हासिल करें। इस महती कार्य में आपका साथ देने के लिए प्रगति-2 आपके पास है जिसका अन्ततः उद्देश्य है बच्चों को उत्साही पाठक बनने के लिए प्रोत्साहित करना और उनमें परिवेशीय सजगता का भाव बनाए रखना।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधाान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा कक्षा छह, सात एवं आठ के लिए तैयार हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों 'वसंत' की रचनाओं को आधाार बनाते हुए 'प्रगति' विद्यार्थियों के लिए भाषायी गतिविधाियों का एक विस्तृत प्रस्तुत करती है। विद्यार्थी रचनाओं का रसास्वादन अपनी मूल पुस्तक 'वसंत' से करेंगे और उन रचनाओं के पठन से उपजी अनुभूतियों को अपने अनुभवों से जोड़ने व कल्पना की ऊँची उड़ान भरने के लिए 'प्रगति' की गतिविधाियों का आनन्द उठाएँगे। सरस और सरल गतिविधाियों का यह व्यापक संसार विविधाता का एक सुंदर ताना-बाना प्रस्तुत करता है जो विद्यार्थियों को न केवल भाषायी कौशलों संरचना और भविष्य के प्रति दृष्टि निर्माण की राह पहचानने में भी योगदान देगा। यह वसंत की रचनाओं का प्रवेश द्वार है साथ ही भाषायी कौशलों में समृद्धता प्राप्त करने का सरस रास्ता भी। प्रगति के साथ अंतः क्रिया करते समय अगर किसी पल विशेष में आपको ऐसा लगे कि अभ्यास कार्य की बहुलता है तो घबराएँ नहीं , अभ्यास कार्य की अनिवार्यता अर्जित किए गए कौशलों के संवर्द्धन के लिए है न कि उन्हें निरुत्साहित करने के लिए यहाँ पर समय प्रबंधन से जुड़े आपके कौशल बहुत महत्वपूर्ण है किसी रचना सन्दर्भ के विशेष में आपको यह महसूस होगा की उसके लिए दी गई गतिविधियाँ रचना के पठन कौशल का आकलन नहीं कर रही तो ऐसा इसलिए किआ गया की आप उस पाठ विशेष को पाने के बाद विद्यार्थियों से ही प्रश्न बनवाए द्य प्रश्नो की प्रकति ऐसी हो जो कल्पनाशीलता , अनुमान लगाने की क्षमता , वर्गीकरण , विश्लेषण , विवरण अदि प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करते हो द्य यदि विद्यार्थी ऐसे प्रश्न बना पाते है तो समएि की वे पाठ के मर्म को पूरी तरह से समझ रहे हैद्य बच्चो के प्रति आपके सरोकार एवं आपकी रचनात्मक , इस सामग्री का भरपूर लाभ उठाएगी। आपके सुझावों को भी अपेक्षा सदैव रहेगी।

विषय सूची

क्रम संख्या	अध्याय	वर्ग	पृष्ठ संख्या
1.	बारह खड़ी का जादू	भाषा खेल	1
2.	शब्दों की बात	भाषा खेल	6
3.	वह चिड़िया जो	कविता	10
4.	बचपन	संस्मरण	17
5.	नादान दोस्त	कहानी	24
6.	चाँद से थोड़ी-सी गप्पे	कविता	31
7.	अक्षरों का महत्त्व	निबंध	36
8.	साथी हाथ बढ़ाना	गीत	44
9.	पार नज़र के	कहानी	49
10.	ऐसे-ऐसे	एकांकी	55

1 बारह खड़ी का जादू

आपको अपने छुटपन का वह दौर याद होगा जब आप भाषा से तरह-तरह के खेल खेलते थे। तब मुँह जुबानी खेलते थे, अब बारह खड़ी और कलम के साथ खेलेंगें। तो आओ बनाएँ कुछ सार्थक शब्द।

ज	जा	जि	जी	जू	जु	जे	जै	जो	जौ
त	ता	ति	ती	तू	तु	ते	तै	तो	तौ
न	ना	नि	नी	नू	नु	ने	नै	नो	नौ
प	पा	पि	पी	पू	पु	पे	पै	पो	पौ

जूता

पानी

क	का	कि	की	कू	कु	के	कै	को	कौ
च	चा	चि	ची	चू	चु	चे	चै	चो	चौ
ल	ला	लि	ली	लू	लु	ले	लै	लो	लौ
म	मा	मि	मी	मू	मु	मे	मै	मो	मौ

कचालू

लौकी

म	मा	मि	मी	मू	मु	मे	मै	मो	मौ
ग	गा	गि	गी	गू	गु	गे	गै	गो	गौ
न	ना	नि	नी	नू	नु	ने	नै	नो	नौ
स	सा	सि	सी	सू	सु	से	सै	सो	सौ

क	का	कि	की	कू	कु	के	कै	को	कौ
ल	ला	लि	ली	लू	लु	ले	लै	लो	लौ
ग	गा	गि	गी	गू	गु	गे	गै	गो	गौ
म	मा	मि	मी	मू	मु	मे	मै	मो	मौ

क ________________ - ________________________________

ख ________________ - ________________________________

ग ________________ - ________________________________

घ ________________ - ________________________________

ड़ ________________ - ________________________________

शब्द निर्माण करें-

ता का ना
रो पी ल च

2

शब्दों की बात

ठ, ड, ढ वर्ण वाले तीन–तीन शब्द लिखो।

ठ

आठ

ड

डलिया

ढ

ढपली

ड़, ढ़ या ढ का प्रयोग करते हुए इन चित्रों के नाम लिखिए-

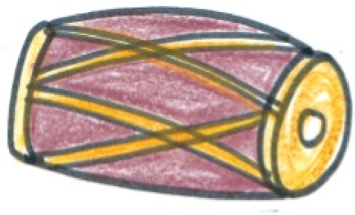

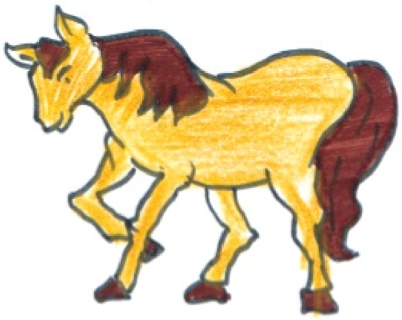

सही मात्रा लगाकर चित्र के नाम पूरे कीजिए-

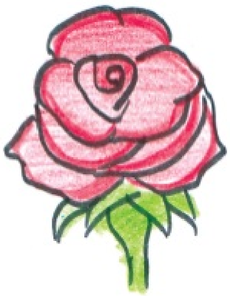

गलाब

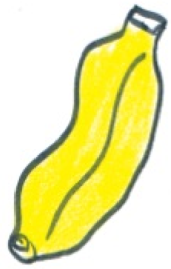

कला

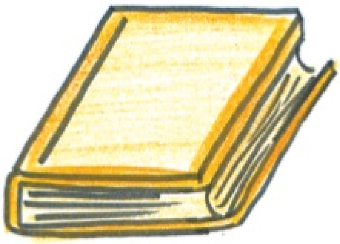

कताब

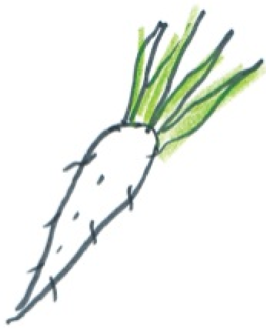

मली

अनुस्वार या अनुनासिक (ं या ँ) लगाकर शब्द पूरे करो।

ऊट

चाद

मूछ

पतग

घटी

बदर

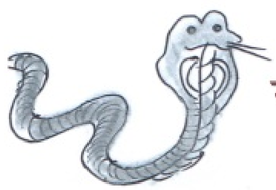

साप

भिडी

3

वह चिड़िया जो

पाठ प्रवेश :-

मित्रे! घर से बाहर आते-जाते, खेलते-कूदते, उठते-बैठते, आपकी नज़र चिड़िया जैसे नन्हे जीव पर अवश्य पड़ी होगी। हो सकता है, यह नन्ही-सी जान आपके घर के भीतर भी आ जाती हो। आप कौतुहल भरी नज़रों से देखने लगते हैं कि आख़िर ये करती क्या है? कभी ुदकती हुई आपकी पुस्तक पर आ बैठती है, तो कभी रोशनदान से झाँक कर आपका ध्यान अपनी तरु़ आकर्षित करती है। कभी घास-ूस का तिनका इधार-उधार बिखेर कर ुर्र से उड़ जाती है और भी न जाने वह क्या-क्या करती है, आप उसकी क्रीड़ाएँ देख-देख आनंदित होते हैं। हो सकता है अपने आस-पास हो रही इन मज़ेदार बातों पर आपका ध्यान जाता ही न हो। अगर नहीं, तो,

एक बार अपने घर-विद्यालय आस-पास के परिवेश में ुदक रही चिड़ियों को ज़रूर देखें। आपको बहुत मज़ा आएगा। 'वह चिड़िया जो' कविता के रचनाकार 'श्री केदारनाथ अग्रवाल' आपको बताना चाह रहे हैं कि जिस चिड़िया को उन्होंने देखा है, वह क्या-क्या करती है।

यह बात तो आप ही तय करेंगे कि प्रस्तुत कविता में कवि ने चिड़िया के साथ हुए अपने अनुभव बताए हैं या िर अपनी कल्पना को शब्द दिए हैं। यह कविता आपको अपने परिवेश में विचरण कर रहे पशु-पक्षियों के करतब देखने के प्रति लालायित तो करती ही है, साथ ही कुछ नए शब्दों से परिचित भी करवाती है, जैसे कि विजन, जुंडी और गरबीली।

हालांकि संदर्भ से जोड़कर आप इन शब्दों के अर्थ स्वत: समझ लेंगे फिर भी बता देते है कि विजन का अर्थ है जंगल , जुंडी जौ और बाजरे की बालियों के लिए प्रयुक्त होता है और गरबीली शब्द गर्व करने वाली के लिए आया है।

आइए , इस कविता को पढ़ते है और उसका आनंद लेते है

1. कुछ किया जाए:-

किसी भी चिड़िया का रंग-बिरंगा चित्र बनाओ।

2. आपने अपने आस-पास बहुत से पक्षियों को उड़ते या दाना चुगते हुए देखा होगा। उनमें से किन्हीं पाँच पक्षियों के नाम लिखिए।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

3. आपने देखा होगा कि आजकल चिड़िया संख्या में कम होती जा रही हैं। इसके कुछ संभावित कारण दिए जा रहे हैं। आप पक्षियों पर इनसे होने वाले हानिकारक प्रभाव लिखिए।

पतंग का मांजा ....
....
....
....

चूईंगम ....
....
....

....
....

दाना पानी न रखना ....
....
....
....

प्रदूषण ....

....

....

....

4. यदि आप चिड़िया होते तो -

.... खाते।

.... पीते।

.... में रहते।

5. कवि ने कविता में चिड़िया को संतोषी और गर्वीली कहा है। आप अपने मित्रें को उनकी विशेषताओं के आधाार पर क्या-क्या कह सकते हैं। पिटारे से शब्द चुनकर किन्हीं पाँच मित्रें के नाम के साथ जोड़कर लिखें। जैसे -

नाम	**विशेषता बताने वाले शब्द**
जैसे - सौरभ/सुरभि	समझदार
....	....
....	....
....	....
....	....

6. निम्न शब्दों से आप क्या समझते हैं। सही विकल्प पर ( ) निशान लगाएं-

(i) जुंडी

(ख) बाजरे की बालियाँ

(ग) जौ और बाजरे की बालियाँ

(ii)चढ़ी नदी

(क) कम पानी की नदी

(ख) बहुत अधिाक पानी वाली ऊनती नदी

(ग) पहाड़ ये उतरती नदी

(iii) जल का मोती

(क) जल की बूंद

(ख) स्वच्छ जल

(ग) चमकता जल

(iv)गरबीली

(क) गर्व करने वाली

(ख) घमंड करने वाली

(ग) दिखावा करने वाली

7. कवि ने छोटी चिड़िया के माध्यम से मानवीय जीवन मूल्यों के बारे में संकेत किया है। आप नीचे लिखे इन मूल्यों का अपने वाक्य में प्रयोग करो-

प्यार - ....
....
....

मीठी बोली - ....
....
....
....

उमंग - ....
....
....

साहस - ....
....
....
....

बूझो तो जानें-

सुबह-सुबह ही आता हूँ,
सबकी खबरें लाता हूँ।
सबको रहता मेरा इंतजार,
हर कोई करता मुझसे प्यार।।

4 बचपन

पाठ प्रवेश :-

मित्रे! बचपन वास्तव में बहुत ही मनमोहक होता है। आप सभी का अभी बचपन ही चल रहा है। ''मैं भी बचपन में आप की तरह ही खूब खेलती-कूदती, रंग-बिरंगें कपड़े पहनती, बहुत घूमती थी,....अब तो यह सब मेरी यादें ही रह गई हैं।'' इस तरह की यादों को प्रस्तुत पाठ 'बचपन' से कृष्णा सोबती जी ने जीवन्त किया है। प्रस्तुत पाठ उनका एक संस्मरण है। संस्मरण यानि, अपनी यादों को लिपिबद्ध करना। आपने भी अपने मित्रें एवं परिवार के लोगों से उन की बातों को सुना व बताया होगा। यदि आप उन यादों को लिखेंगे तो वह आपका संस्मरण कहलाएगा। आप इस पाठ के जरिये यह तो जानेंगे ही, कि लेखिका बचपन में क्या-क्या पसंद करती थी, साथ ही आप संस्मरण जैसी विधाा का आनंद भी ले पाएँगे। आपको यह भी पता चलेगा कि बड़े और बच्चों की पसंद में कैसे अंतर आता जाता है, तो चलिए, लेखिका के बचपन में झाँककर देखें।

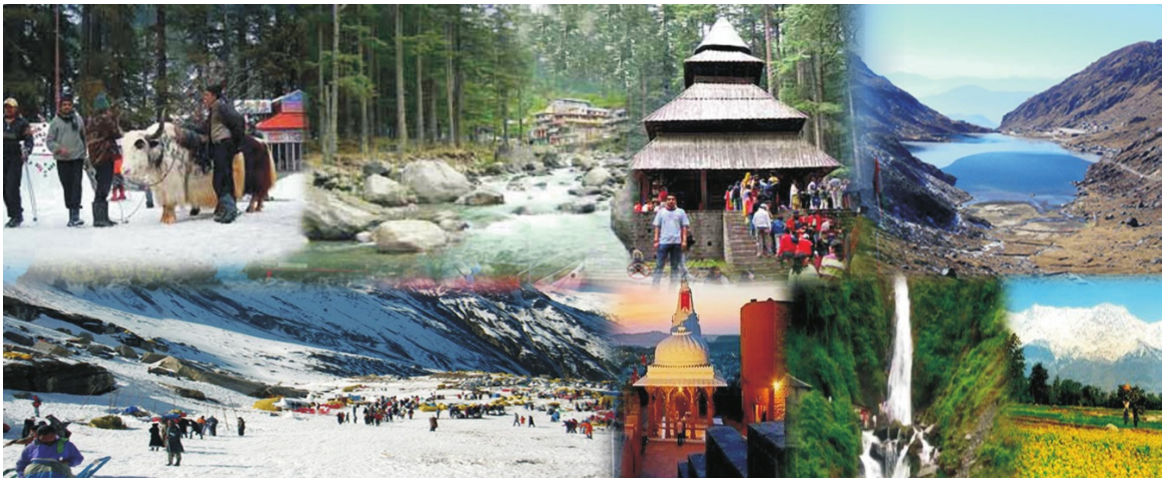

1. पाठ की लेखिका को अपने बचपन में निम्न में से कौन-सी चीज़ें पसंद थी? उन पर गोला लगाएँ व उनका नाम भी लिखें -

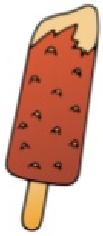

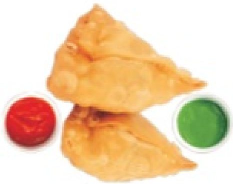

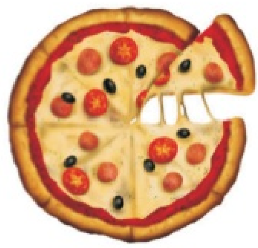

2. आप के घर के बड़े-बूढ़ों के पास कुछ ऐसी वस्तुएँ होंगी जो आपके सामान से अलग होंगी। उन वस्तुओं के नाम रेल के डिब्बे में लिखें:-

3. आप खाने में कौन-कौन सी चीज़े पसंद करते हैं? नाम लिखें व चित्र भी बनाए।

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

4. लेखिका द्वारा याद किए गए फ्रॅंक कौन-कौन से व कैसे हैं? लिखें व चित्र बनाएँ।

(i)..
....

(ii) ....
....

(iii)..
....

(iv)..
....

5. पाठ में आए अंग्रेजी भाषा के शब्दों को ढूँढ़कर लिखें और वाक्यों में प्रयोग करें, जैसे - ग्रे, चॉकलेट, स्टॉकिंग ....

(i) ....
....

(ii)..
....

(iii)..
....

(iv)..
....

(v)..
....

(vi)..
....

(vii)..
....

6. अनेक क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। नीचे घड़े में कुछ क्रियाएँ और भाववाचक संज्ञाएँ लिखी हैं। किस क्रिया से कौन-सी भाववाचक संज्ञा बनी है,आमने-सामने लिखिए-

नाम	विशेषता बताने वाले शब्द
जैसे - बदलना	बदलाव
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

7. अपने बचपन की किसी भी मज़ेदार घटना के बारे में लिखो-

....

....

....

8. प्रस्तुत पाठ की रचनाकार कृष्णा सोबती जी ने 'चना ज़ोर गरम' की पुड़िया के बारे में बताया है, आप को चना, मूंगफली, बेर, इमली से जुड़ी कोई कविता/गीत ज़रूर याद आ रही होगी। उसे लिखो।

....

....
....

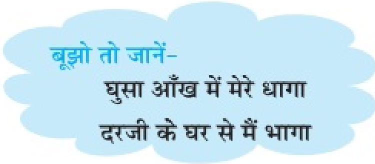

5

नादान दोस्त

पाठ प्रवेश :-

हम सभी को अपने दोस्त बहुत पसंद हैं, हम सभी अपने दोस्तों की हमेशा मदद करने के लिए भी तैयार रहते हैं। फ़िर चाहे, उसके लिए हमें चोट लगे, मार पड़े या कोई और नुकसान हो जाए, जैसे-केशव और श्यामा के साथ इस 'नादान दोस्त' कहानी में हुआ। उन्होंने कोशिश तो की चिड़िया के अंडों के लिए आरामगाह (घर) बनाने की, किन्तु बात उल्टी ही पड़ गई। छूने के कारण चिड़िया ने अंडों को ही घोंसले से गिरा दिया और केशव अपराधाबोधा से भर गया कि उसने चिड़िया के बच्चों के प्राण ले लिए। महान कथा शिल्पी प्रेमचंद जी ने इस कहानी में बाल मन को पूरी तरह खोलकर रख दिया है। केशव और श्यामा के जिज्ञासु मन के प्रश्न, उनके स्वयं ही सुझाव व हल निकालने की कोशिश, हमें अपने बचपन की छोटी-मोटी शरारतों की याद करा देती है। माता-पिता से छुप-छुपकर, अपनी समझदारी दिखाते हुए बुद्धू बन जाना और फ़िर रो-रोकर पछताना और नादानी करना ही -''नादान दोस्त'' कहानी को मज़ेदार बनाता है, तो चलिए पढ़ें ये कहानी-

कुछ किया जाये:-

1. यदि केशव और श्यामा के स्थान पर आप व आपका मित्र होते तो अंडों के बारे में क्या बातचीत करते?

श्यामा- ....
....

केशव - ....

....

श्यामा- ....
....

केशव - ....
....

श्यामा- ....
....

केशव - ....
....

श्यामा- ....
....

केशव - ....
....

श्यामा- ....
....

केशव - ....
....

2. सोचकर बताएँ क्या आपने कोई काम केशव और श्यामा की तरह माता-पिता से छिपकर किया है, फिर क्या हुआ? बताएँ।

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

3. अधयापक की सहायता से पाठ में आए, तत्सम तद्भव देशज और विदेशी शब्दों की सूची बनाएँ-

तत्सम	**तद्भव**	**देशज**	**विदेशी**
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

4. **विशेषण** व **शब्दों** संज्ञा का मिलान करें-

हरी	भाला
नुकीला	बिल्ली
ताज़ी	पत्ती
चितकबरी	**सब्ज़ी**
रोनी	तिनके
पुरानी	पानी
तेज़	सूरत
साफ़	धाोती
थोड़े	अंडा
बड़ा	लू

5. निम्न शब्दों के बहुवचन लिखकर वाक्य बनाएँ चिड़िया

चिड़ियाँ - बहुत सी चिड़ियाँ दाने चुग रही हैं।

बच्चा - ....
....

अंड़ा - ....
....

प्याली - ....
....

कपड़ा - ....
....

छड़ी - ....
....

टोकरी- ....
....

टहनी - ....
....

कमरा - ....
....

घोंसला ....
....

गद्दी - ....
....

6. चिड़िया घोंसला बनाने के लिए तिनका, घास-फूंस, चिथड़े, रूई आदि प्रयोग करती है। निम्न लोग किन-किन चीज़ों की मदद से अपना काम करते हैं-

विद्यार्थी - ....
....

रसोइया - ....
....

डाक्टर - ....
....

कुम्हार - ....
....

चित्रकार- ....
....

किसान - ....
....

दरजी - ....
....

लकड़हारा - ....

....

7. नीचे लिखे मुहावरों से वाक्य बनाएँ-

भीगी बिल्ली बनना

....
....

आँख का तारा

....
....

नाकों चने चबवाना

....
....

अंधो की लाठी

....
....

बूझो तो जानें-

दो सुंदर दोस्त, दोनों एक रंग के
एक बिछड़ जाए तो, दूसरा काम न आए

6

चाँद से थोड़ी-सी गप्पें

पाठ प्रवेश :-

''चंदा मामा दूर के
पुए पकाए बूर के
आप खाएँ थाली में
मुन्नी को दे प्याली में
प्याली गई टूट
मुन्नी गई रूठ
लाएँगे नई प्यालियाँ

बजा-बजा के तालियाँ''

ये लोरी बचपन में सभी ने सुनी होगी और सभी ने चाँद से मामा का रिश्ता भी बनाया होगा और उनसे खूब गप्पें भी लगाई होंगी। तो चलिए! आज हम कविता पढ़ते हैं - जिसका नाम है - 'चाँद से थोड़ी-सी गप्पें' - इसमें एक लड़की चाँद से तरह-तरह के सवाल पूछती है कि, तुमने क्या पूरे आसमान की तारों जड़ी ड्रेस पहन रखी है? तुम घटते-बढ़ते क्यों रहते हो? तुम्हें क्या कोई बीमारी है? कभी गोल हो जाते हो कभी तिरछे! तुम हमें बुद्धू बनाते रहते हो। हम सब जानते हैं और न जाने क्या-क्या गप्पें वह लड़की चाँद से करती है।

इस कविता के रचनाकार शमशेर बहादुर सिंह जी मूलत: चित्रकार और उर्दू-फारसी के शायर रहे हैं। इस कविता को पढ़कर हम एकदम अपने अपने बचपन में पहुँच जाते है तो आइए कविता को पढ़कर गप्पो का मजा लेते है

1. चाँद किस प्रकार घटता-बढ़ता है, चित्र बनाकर बताए-

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15

2. एक चाँद में कुछ शब्द लिखें हैं, दूसरे में उन शब्दों के अर्थ लिखें हैं। दोनों से शब्द-अर्थ निकाल कर आमने-सामने लिखें-

______________ ______________ ______________ ______________

______________ ______________ ______________ ______________

3. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्य में करिए-

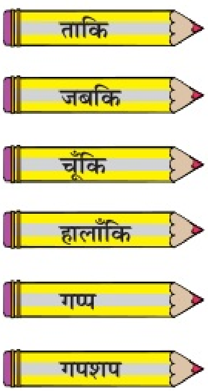

....

....

....

....

....

....

4. 'ई' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए-

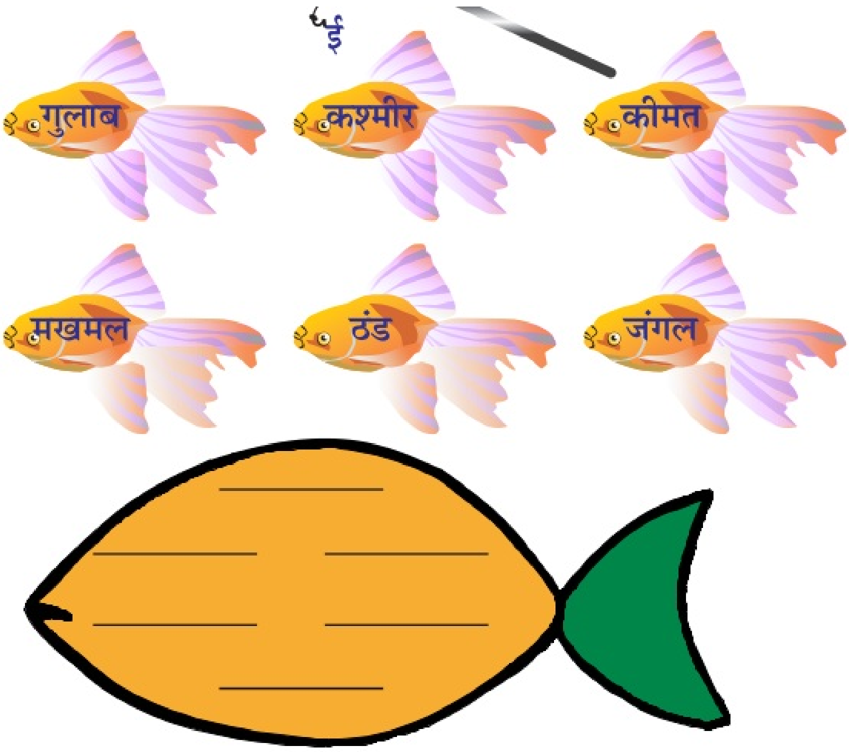

5. शब्द कुंजी से शब्द लेकर रिक्त स्थान भरोः-

दक्षिणायन, कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष, उत्तरायन

(**i**) जिन पंद्रह दिनों में चँद्रमा बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा तक पहुँचता है, उसे कहते .... हैं।

(**ii**) जिन पंद्रह दिनों में चन्द्रमा घटते-घटते अमावस्या तक जाता है, उसे .... कहते हैं।

(**iii**) जिन छः महीनों में मौसम का तापमान बढ़ता है, उसे .... कहते हैं।

(**iv**) जिन छः महीनों में मौसम का तापमान घटता है, उसे .... कहते हैं।

6. संवत् के बारह महीनों के नाम नीचे पेड़ की पत्तियों में लिखो-

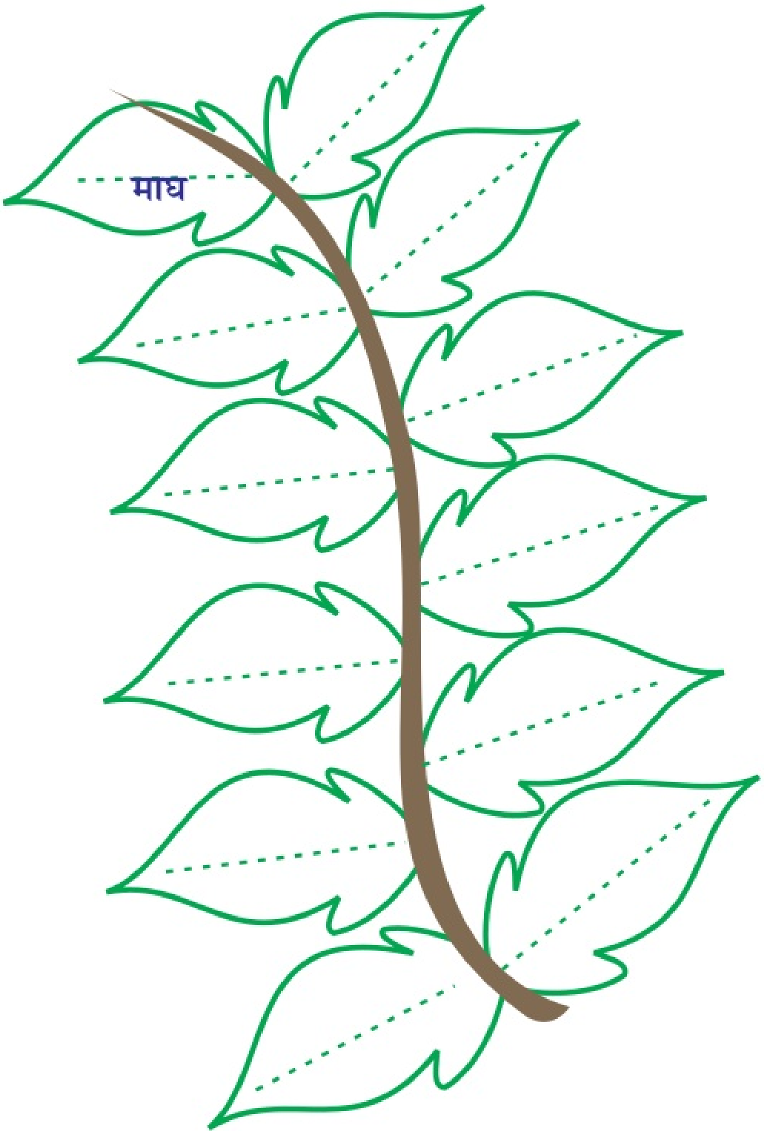

7. इस कविता में लड़की ने चाँद से गप्पें लगाई हैं। आप पेड़ से गप्पे लगाते हुए क्या कहोगे, लिखिए-

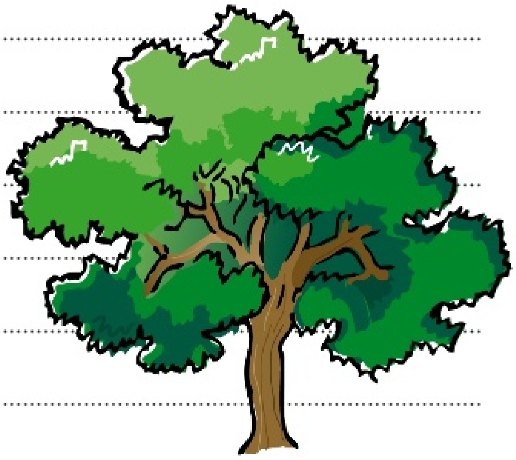

बूझो तो जानें-

दुनिया भर की करता सैर
धरती पर न रखता पैर
दिन में सोता, रात को जगता
रात अंधेरी मेरे बगैर

7 अक्षरों का महत्त्व

पाठ प्रवेश :-

बच्चो! आपके पास भाषा नाम की एक बहुत ही रोमांचकारी मज़ेदार चीज है। इसका सहारा लेकर आप अपने मन की बातें और ज़रूरतें किसी दूसरे को बता पाते हैं। जब आप बोल कर अपनी बात कहते हैं तो यह मौखिक और जब अपनी इच्छा, अपना गुस्सा, अपना विचार लिख कर बताते हैं तो यह है भाषा का लिखित स्वरूप। मैं अपनी बात आप तक भाषा के इस लिखित स्वरूप द्वारा ही तो पहुँचा रही हूँ। आप तरह-तरह की कहानियाँ, किस्से, जानकारियाँ पढ़ते हैं तो कैसे? भाषा के लिखित स्वरूप द्वारा ही तो यह संभव हो पाता है।

भाषा की लिखित दुनिया में प्रवेश करने के लिए आपको चाहिए एक लिपि जो अक्षरों पर आधाारित है। बिना अक्षर के भला आप बोल-सुन-पढ़-लिख पाते क्या?

तो साथियों, प्रस्तुत पाठ 'अक्षरों का महत्व' आपको अक्षरों की मज़ेदार दास्तान बताने जा रहा है।

इस पाठ के रचनाकार श्री गुणाकर मुले जी हैं। तुम्हें यह जानकर बड़ा मज़ा आएगा कि गुणाकर मुले जी मूलत: गणितज्ञ हैं। है न रोचक बात। एक गणितज्ञ की लेखनी से निकले झिलमिलाते अक्षर आपके सामने हैं। इस पाठ के ज़रिए आप समझ बनाएँगे कि अक्षरों की खोज कैसे हुई, कब हुई, किसने की। रचनाकार आपको भाषा के जन्म से लेकर उसके लिखित/मुद्रित रूप तक आने के सफ़र पर ले जा रहे हैं। एक समय था जब चित्र , संकेत , भाषा का माध्यम थे , फिर ध्वनि और फिर अक्षर आए।

तो बच्चो , आओ चलते है अक्षरों के इतिहास जानने के सफर पर इस सफर से वापिस आकर यह भी बताना की एक गणितज्ञ की लेखनी से लिखी यह रचना आपको कैसी लगी ?

1. नीचे डिब्बे में बहुत से विशेषण हैं आपको जो भी विशेषण हाथी के लिए उपयुक्त लग रहे हैं उन्हें नीचे लिखो-

हाथी

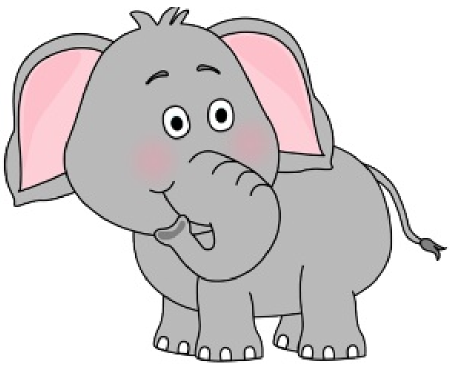

....

....

....

....

....

काला बड़ा भोला भोली रंग-बिरंगा मनमोहक ऊँचा
खूँखार डरावना कंजूस सुंदर लम्बा मोटा वफ़ादार

2. बताइये कि कौन-कौन से शब्द कलश के भीतर दिए गए अक्षरों और मात्रओं से बन सकते हैं? उन पर गोला बनाओं।

3. चित्र देखकर उसके नाम में सही स्थान पर बिंदु या चंद्रबिंदु लगाइए -

आख

गजा

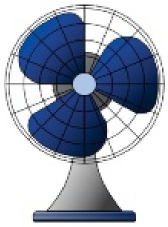

पखा

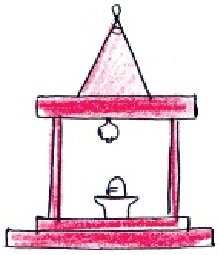

मदिर

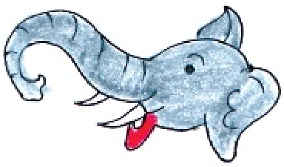

सूड

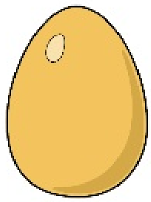

अडा

4. आओ पाठ को खोलें ....

- 'अक्षरों की खोज के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई।'

क्या आपको भी ऐसा ही लगता है कि अक्षरों की खोज के साथ दुनिया में बहुत बदलाव आए। किस तरह से बदली यह दुनिया, उदाहरण देकर चर्चा करें।

- पाठ में गणित की इकाइयों से जुड़े कुछ शब्द आएँ हैं जैसे :-

तीन अरब ....

एक करोड़ ....

पाँच लाख ....

छह हज़ार ....

इन इकाइयों को अंकों में लिखें। आप अपने गणित विषय के अधयापक की मदद ले सकते हैं।

5. आप अपनी बातों को बोलकर कहते हैं। बोलने के लिए आप धवनि यानि कि स्वर और व्यंजन का सहारा लेते हैं।

आपके विद्यालय या घर के आस-पास ऐसे बच्चे हो सकते हैं जो बोलकर अपनी बात नहीं कह पाते, वे विचारों-इच्छाओं का

आदान-प्रदान किस तरह करते हैं, मालूम करें और कक्षा में बताएँ।

'यदि अक्षरों की खोज न हुई होती तो ....''

इस विषय पर कुछ मज़ेदार बातें आपके मन में उथल-पुथल मचा रहीं होंगी, तो देर किस बात की? उठाइए अपनी लेखनी और लिख दीजिए अपने अनोखे विचार।

....

....

....

....

....

....

....

6. हम जो भी बोलते हैं, वह 'भाषा' है। भाषा को लिखित रूप से दर्शाने के लिए चाहिए 'लिपि'। नीचे मटके में कुछ लिपियाँ आपसे कुछ कहना चाह रही हैं। क्या आप पहचानेगें कि कौन-कौन सी भाषाएँ हैं ये :-

7. 'आ' या 'ए', 'बी' ये अक्षर हैं जिनसे मिलकर शब्द बनते हैं। शब्द बहुत कुछ कहते हैं। नीचे दिए गए चित्र भी तो कुछ कह रहे हैं, ज़रा मिलान करिए -

कृपया शांत रहें

खतरा

पुस्तकालय

तिराहा

धूम्रपान निषेध

8. नीचे लिखे शब्दों के अक्षर उलट पुलट गए हैं। सही स्थान पर रखकर शब्द बनाओ।

य हा स ता

____

आ न स मा

____

ल कु व्या

____

श्य व आ ता क

____

की चौ र दा

____

ख दे ल भा

____

9. दो घड़ों में इक रंग पानी

नीचे दो बर्तन हैं। एक बर्तन में मात्रओं के बिना अक्षर हैं। दूसरे बर्तन में मात्रओं के साथ हैं। ऐसा करते हैं, एक से लेते हैं अक्षर और दूसरे से लेते हैं मात्र और फिर

बनाते हैं कुछ शब्द। तो आओ शुरू करते हैं:-

जैसे :-

गिनी, पूजा ....

....

....

....

....

10. इन चित्रें में भाषा का कौन-सा रूप प्रयोग हो रहा है?

____

सुनना

____

बूझो तो जानें-

पैर नहीं, फिर भी चलती

8

साथी हाथ बढ़ाना

पाठ प्रवेश :-

साथियों, आपने अपने आस-पास निर्माण कार्य होते हुए देखा होगा। सैकड़ों मज़दूर मिलकर एक भवन का निर्माण करते हैं। वे आपस में तालमेल बनाकर बहुत खूबसूरती से काम करते हैं। इसी प्रकार आपके घर और विद्यालय में भी कोई एक या दो व्यक्ति ही सारा काम नहीं करते, हरेक काम के लिए अनेक लोगों के सहयोग की आवश्यकता पड़ती ही है। प्रस्तुत गीत 'साथी हाथ बढ़ाना' भी कुछ यही कहता है, जिसे मशहूर गीतकार 'साहिर लुधियानवी' ने लिखा है। उनका मूल नाम 'अब्दुल हई' है। वे साहिर नाम से ही लिखते थे। उनका जन्म 8 मार्च 1921 में पंजाब के लुधियाना जिले के करीमपुर कस्बे में हुआ था, इसीलिए 'साहिर' के साथ 'लुधियानवी' जुड़ गया। उन्होंने अनेक फ़िल्मों के लिए गीत लिखे हैं। 'साथी हाथ बढ़ाना' गीत भी पुरानी फ़िल्म 'नया दौर' में नायक दिलीप कुमार

और नायिका वैयजंतीमाला पर फ़िल्माया गया था। इस फ़िल्म में गाँव के सभी ताँगे वाले मिलकर स्वयं ही कुछ दिनों में सड़क बनाते हैं और बस वाले से ताँगे की रेस लगाकर जीत भी जाते हैं क्योंकि मिलकर मेहनत करने से नामुमकिन (असंभव) लगने वाले काम भी मुमकिन (संभव) हो जाते हैं।

इसके लिए केवल पक्के इरादे, मेहनत और एक-दूसरे का साथ देना जरूरी होता है। जिस प्रकार एक-एक बूँद मिलकर नदी बनती है। रेत का एक-एक कण मिलकर रेगिस्तान बन जाता है। उसी प्रकार हम सब भी एक दूसरे का सहयोग कर अपना भाग्य स्वयं ही बना सकते है

तो चलिए गए इस गीत को

1. आप अपने साथियों, परिवार के सदस्यों व पड़ोसियों से कैसी मदद लेते व देते हैं, लिखें(कोई दो-दो लिखिए)-

	साथियों से मदद लेना	परिवार के सदस्यों से मदद लेना	पड़ोसियों से मदद लेना
1.	....	....	....
2.	....	....	....

	साथियों से मदद देना	परिवार के सदस्यों से मदद देना	पड़ोसियों से मदद देना
1.	....	....	....
2.	....	....	....

2. आपके घर में कौन, क्या-क्या काम करता है? बताइए-

माता	पिता	आप
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

3. नीचे हाथ से संबंधित कुछ मुहावरे लिखे हैं उनका वाक्यों में प्रयोग करें।

(1) हाथ को हाथ न सूझना

....

(2) हाथ सफ़ करना

....

(3) हाथ-पैर ़ूलना

....

4. निम्न वाक्य में निज (अपना) वाचक सर्वनाम के बॉक्स में दिए विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हुए खाली स्थान भरो-

(i) **हमें** .... को बचाना है।

(ii) .... जो बने कीजिए।

(iii)**सभी** .... काम करें।

(iv)**सभी** .... बात कर रहे थे।

(v) **मैं** .... दोष लेता हूँ।

(vi)**मुझे** .... कुछ करना ही होगा।

अपने लिए	अपना	अपने पर
अपने को	अपने से	आपस में

5. नीचे दिए पेड़ों से शब्द व उनके अर्थ लेकर आमने-सामने लिखो -

....

....

....

....

....

....

....

बूझो तो जानें-

एक थाल मोतियों से भरा
सबके सिर पर औंधा धरा

9 पार नज़र के .....

पाठ प्रवेश :-

बच्चो! कुछ समय पहले रितिक रोशन की एक फ़िल्म आई थी 'कोई मिल गया'। आपने पता नहीं देखी या नहीं देखी? जानते हैं, यह ज़िक्र यहाँ पर क्यों किया? आप समझ गए होंगे कि प्रस्तुत पाठ की प्रस्तति इस फ़िल्म के मूल स्वभाव से मेल खाती है। 'कोई मिल गया' एक फ़ैंटेसी थी यानि कि काल्पनिक घटना पर आधाारित फ़िल्म और प्रस्तुत पाठ 'पार नज़र के' भी एक फ़ंतासी है। यह पाठ आपको एक दूसरे ग्रह की रहस्यमयी दुनिया में ले जाएगा जहाँ जीवन की धुरी तरह-तरह के यंत्रें के इर्द-गिर्द घूमती है। आपकी ही उम्र का छोटू यानि कि इस कहानी का नायक रचनाकार द्वारा रचे गए काल्पनिक ग्रह का जम कर मज़ा लेता है। मुझे लगता है छोटू के साथ-साथ आप भी उस अनोखी दुनिया का आनन्द उठाएँगे।

अरे भाई! रुकिए। आप तो छोटू के साथ जाने के लिए एकदम उतावले हो उठे। साथियो! यह तो जान लीजिए कि कल्पनाओं की

दुनिया में सैर कराने वाला पाठ लिखा किसने है?

यह ंतासी की दुनिया महान वैज्ञानिक 'श्री जयंत विष्णु नार्लोकर' ने रची है। मूलत: यह रचना मराठी में लिखी गई थी। हिन्दी भाषी बच्चे, यानि कि आप भी इस रोमांच पैदा करने वाली रचना का आनन्द उठा सकें तो सुश्री रेखा देशपाँडे जी ने इसका हिन्दी में अनुवाद किया।

इस रचना के माधयम से आप दो बातों का मज़ा ले रहे हैं,

एक तो तिलस्मी दुनिया के मज़े लेंगे, दूसरे वैज्ञानिक की लेखनी से लिखी मराठी रचना हिंदी की दुनिया में जब अनुवाद के पाँव पसारती है तो कैसी दिखती है , यह देखेंगे मै आपको और नहीं रोकती चलिए छोटू के साथ अपनी धरती से अलग किसी दूसरे गृह की दुनिया में आकर जरूर बताइए की आपने वहाँ किस तरह के मजे किए।

शब्दों के खेल

1. नीचे चौकोर खानों में लिखे वर्णों से अधिाक सेअधिाक शब्द बनाओ। उदाहरण देखो।

प क ड़ क र

पक पकड़ कड़क कर पर

आ म ला ई ख र बू जा मु न

....

का ली ची ता रे श म

....

रा खी र स मो सा ह स जा

....

2. चित्रें की सहायता से मुहावरे पूरे करके लिखिए-

दिखाना

....

खट्टे करना

....

का

....

खुलना

....

शब्द - सीढ़ी

3. चित्रें की सहायता से शब्द सीढ़ी पूरी करो।

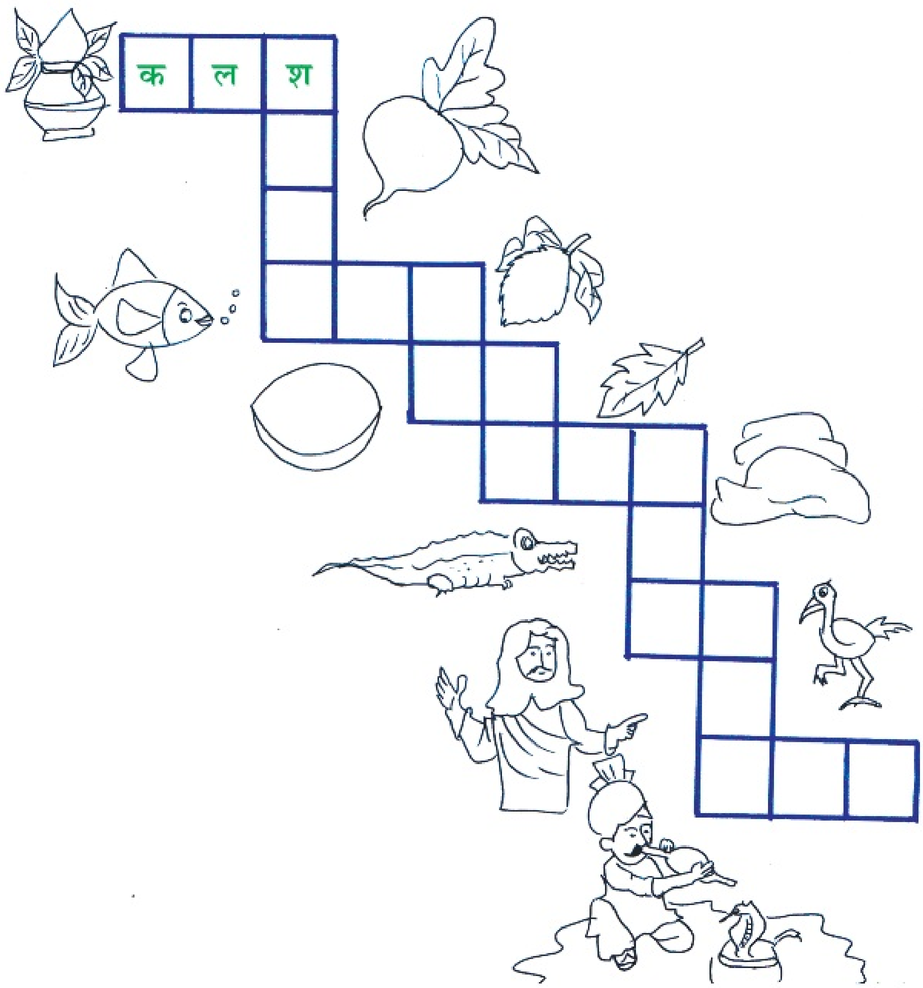

4. चित्र पहचानकर उसके नाम से सही स्थान पर अनुस्वार लगाइए -

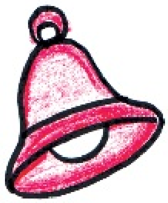

घटा

मूछ

पख

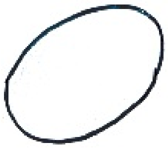

अडा

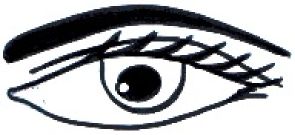

आख

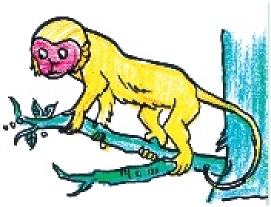

लगूर

सतरा

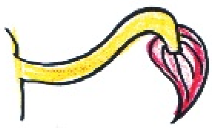

पूछ

वर्ग - पहेली

5. निम्नलिखित वर्ग-पहेली में से विशेषण शब्द चुनकरलिखिए-

मी	सु	हा	ना	प
ठा	द	क	व	ह
ग	र	म	थो	ला
पाँ	व	धु	ड़ा	ल
च	तु	र	नी	ची

6. शब्द बनाइए -

	बा	
पा	ल	क
	क	

	प	
ब		न

	क	
		ड़ी
	ड़ी	

	गि	
	र	ती

	उ	
	न	का

	श	
ल		र
	र	

बूझो तो जानें-

मैं हरी मेरे अन्दर मोती काले
मुझे छोड़, मेरे मोती खाले

10

ऐसे – ऐसे

प्रस्तुत एकांकी 'ऐसे-ऐसे', हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक 'विष्णु प्रभाकर' द्वारा लिखी गई है जिन्होंने अनेक लघु-कथाएँ, उपन्यास, नाटक तथा यात्र संस्मरण लिखे हैं। उनके लेखन में देश प्रेम, राष्ट्रवाद तथा सामाजिक विकास दिखाई देता है। इन्हें पद्मभूषण, ज्ञानपीठ तथा साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

अधिकांश बच्चे विद्यालय न जाने के बहुत से बहाने बनाते हैं। बच्चो! आप ने भी कभी-न कभी कुछ बहाने बनाए होंगे। इस एकांकी में जो बच्चा मोहन है उसने विद्यालय का काम नहीं किया इसलिए वह तरह-तरह के बहाने बनाता है चलो देखते हैं वह किस प्रकार का बहाना बनाता है।

प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने बहुत रोचक ढंग से एक बच्चे की मनःस्थिति को दर्शाया है। 'ऐसे-ऐसे' एकांकी (जिसे हम छोटा नाटक कह सकते हैं।) में मोहन नाम का एक लड़का जिसकी उम्र आठ-नौ वर्ष की है जो तीसरी कक्षा में पढ़ता है। इस समय वह बड़ा बेचैन लग रहा है। बार-बार पेट को पकड़ता है और कहता है कि बहुत जोर से ऐसे-ऐसे हो रहा है। माँ, पिताजी से डॉक्टर को बुलाने के लिए कहती हैं। माँ मोहन के पेट को गर्म पानी से सेकती हैं। मोहन के पिताजी से पूछती हैं कि कहीं इसने अंट-शंट तो नहीं खा लिया। पिताजी कहते हैं नहीं, केवल एक केला और संतरा खाया था। द"़तर तक चलने तक कूदता ीर रहा था। बस अड्ढे पर आकर अचानक से बोला-पिताजी, मेरे पेट में तो कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है।

माँ पिताजी बहुत परेशान थे, बार-बार पिताजी पूछ रहे थे, कहीं चाकू-सा तो चुभ नहीं रहा? गोला-सा ूटता है क्या? परन्तु ऐसे मोहन ने तो एक ही रट लगा रखी थी- कुछ ऐसे-ऐसे होता है। इसके साथ बार-बार ज़ोर से कराह रहा था। माँ हींग, चूरन, पिपरमैंट सब दे चुकी थी, अब वैद्य जी का इंतजार कर रही थी। पिता जी डॉक्टर को बुलाते है इतने में एक पड़ोसी दीनानाथ घर में आकर मोहन के हाल पूछते है और बताते है की मई वैद्य जी को कह आया हूँ मोहन तो अभी भी रुआँसा सा कराह रहा था कुछ ही समय बाद वैद्य जी आ जाते है और मोहन की जाँच करते है और कहते है , वात का प्रकोप है पेट साफ नहीं हुआ और हाथ की उंगलिओ को फैलाकर फिर सिकोड़ते है और कहते है की ऐसे ऐसे होता है ? मोहन कहता है हाँ वैद्य जी बीमारी समझ गए और कहा अभी पुड़िया भिजवा देता हूँ पिता जी वैद्य जी को घर के द्वार तक छोड़ते हुए जाते है और पांच का नोट भेट स्वरुप दे देते है वैद्य जी के जाने के बाद डॉक्टर साहब आते जाते है वह भी जांच करते है डॉक्टर कहता है की कब्ज ही लगता है दवा भेजता हूँ डॉक्टर को जाते समय पिता जी दस का नोट देते है उतने में एक पड़ोसन भी मोहन का हाल पूछने आ जाती है। मोहन अभी भी पेट दबाते हुए कहता है 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है। थोड़ी देर के बाद मोहन के मास्टर जी घर में आ जाते हैं और कहते हैं मोहन की दवा वैद्य और डॉक्टर के पास नहीं है। इसकी 'ऐसे-ऐसे' की बीमारी को मैं जानता हूँ।

उन्होंने मोहन को कहा - डरो मत, बेशक कल स्कूल मत आना। उन्होंने मोहन से पूछा कि स्कूल का काम हो गया है, मोहन चुप रहा, माँ और मास्टर जी के दुबारा पूछने पर मोहन कहता है कि सब काम नहीं हुआ। मास्टर जी समझ गए कि 'ऐसे-ऐसे' काम न करने का डर है। तब मास्टर जी ने माँ को बताया कि मोहन ने महीने भर मौज मस्ती की। स्कूल का काम नहीं किया बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा। 'ऐसे-ऐसे' की दवा मास्टर जी ने यह बताई कि आप को स्कूल से दो दिन की छुटी मिलेगी, जिसमें आप काम पूरा करोगे और इससे आपका 'ऐसे-ऐसे' दूर भाग जाएगा। उतने में दीनानाथ जी और पिताजी दवा लेकर आते हैं। तब माँ मास्टर जी वाली पूरी बात बताती है। पिताजी सुनकर चकित रह जाते हैं और उनके हाथ से दवा की शीशी छूटकर गिर पड़ती है। एक क्षण मोहन को ठगे से देखते हैं और ीर हँसने लगते हैं।

1. चित्रें में संज्ञा शब्द ढूंढते हुए वाक्यों को पूरा करोः-

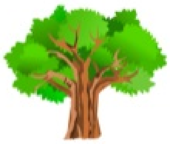

क) .... सारा दूध पी गई।

ख) कल हम .... देखने गए थे।

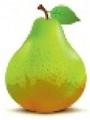

ग) आकाश में .... छा रहे हैं।

घ) मीना को .... बहुत पसंद है।

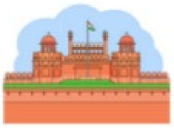

ड.) .... हमें छाया देते हैं।

च) चाचाजी ने मोहन को एक .... दी।

56

2. चित्र देखकर क्रिया शब्द भरिए -

क) माता जी सब्ज़ी .... ।

ख) महिमा सुंदर रंगोली .... ।

ग) डाकिया चिट्ठी ....।

घ) बच्चे पटाखे .... ।

3. नीचे लिखे वर्णों और मात्रओं की सहायता से छह-छहशब्द बनाकर लिखिए -

क) र क म ा ो

मोर ______ ______

______ ______

______ ______

ख) ल ज द ा ि

दिल ______ ______

______ ______

______ ______

4. वर्ग पहेली में से संज्ञा शब्द चुनकर लिखिए -

आ	द	मी	स	ऊँ
म	ता	हा	चि	चा
ब	च	प	न	ई
च्चा	ना	पी	गं	गा
ता	कि	ता	ब	ता

किताब ______________ ______________

______________ ______________

______________ ______________

______________ ______________

5. बॉक्स में से शब्द निकालकर स्त्रीलिंग या पुल्लिंग के थैलों में डालो।

स्त्रीलिंग

मोर माली चिड़िया

गधा दुल्हन

बालिका चाचा गाय

गुड्डा बैल बुढ़िया

पुत्र चुहिया शेर

रानी राजकुमार हथिनी

पुल्लिंग

बूझो तो जानें–

गोल-गोल आँखों वाला
लंबे-लंबे कानों वाला
गाजर खूब खाने वाला
इसका नाम बताओ लाला